

भारत का राजपत्र **The Gazette of India**

प्रसाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० २००] नई दिल्ली, शुक्रवार, दिसम्बर १५, १९६७/अग्रहायण २४, १८८९

No. 200] NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 15, 1967/AGRAHAYANA, 24, 1889

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF COMMERCE

RESOLUTION

New Delhi, the 15th December 1967

No. 16(5) Plant(B)/67.—In Government's letter No. 16(2) Plant(B)/65 dated the 28th October, 1966, the Tariff Commission was requested under section 12(d) of the Tariff Commission Act, 1951, to conduct necessary enquiries in regard to the cost of production of raw rubber and to submit a report on the fair prices for its different grades and qualities. The Commission has submitted its report wherein the following recommendations have been made:—

- (1) An census of actual area under rubber with special reference to mature area should be undertaken by the Rubber Board with the assistance of Revenue authorities in order to make more reliable data available.
- (2) The Rubber Boards estimate of an average yield of 294 Kg. per hectare (262 lbs per acre) in the small holdings sector is an under-estimate. It is desirable to devise more stringent measures of checking transactions by dealers to ensure not only the correct data of production but also the assessment of the cess actually due.
- (3) The existing differentials in the prices of grades of rubber should be retained as they are.

- (4) For an orderly marketing of indigenous production, it is necessary that imports should come in regular monthly instalments and not as has happened during the latter half of 1966 in large quantities, just when the tapping of trees is at its height.
 - (5) The Rubber Board should be consulted both on the volume and programming of imports. The imports should be evenly spread out over the year.
 - (6) The expenses incurred by a planter for replantation should be considered as capital investment and this replantation cost must be earned through the sale of rubber. One half of the development expenses (*viz.*, Rs. 11.67) should be included in the retention price of the grower. A new scale of subsidy is recommended to be paid to the growers to enable them to meet the cost of replantation which will not be fully recovered through the retention price.
 - (7) A price of Rs. 415 per 100 kgs. should be fixed as the price to be retained by the growers *i.o.b.* Cochin for R.M.A. 1 grade rubber. This will be exclusive of sales-tax and cess. The prices for other grades and for preserved latex will be fixed after adjustment of grade differentials indicated by the Commission.
 - (8) A reduction in the cess needs to be considered by Government.
 - (9) The rehabilitation allowance provided for replantation in Kanyakumari district of Madras State is not on a par with that in the rest of the State, and needs to be looked into by the Government of Madras.
2. Government accept recommendations (1) and (3) above.
 3. Government have taken note of the recommendation (2) above.
 4. Government have taken note of the recommendations (4) & (5) above and steps will be taken to implement them to the extent practicable.
 5. Recommendation (8) is under examination by the Government.
 6. Government have already accepted recommendation (7) in para 1 of their Resolution No. 19(15)Plant(B)/67 dated the 26th September, 1967 published in the Gazette of India Extraordinary dated the 27th September, 1967.
 7. Keeping in view the expansion of the developmental and research activities of the Rubber Board for further development of the rubber plantation industry, Government do not consider it feasible to reduce the existing rate of cess on rubber, *viz.*, 30 Paise per kg., as suggested by the Commission in recommendation (8) above.
 8. Government have brought the recommendation (9) to the notice of the Government of Madras for necessary action.

ORDER

Ordered that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

S. BANERJEE, Dy. Secy.

वाणिज्य मंत्रालय

संकल्प

नई दिल्ली, दिनांक 15 दिसम्बर 1967

सं० 16(5)/प्लांट (बी)/67. —टैरिफ आयोग अधिनियम, 1951 की धारा 12 (घ) के अधीन सरकार क फल मंडया 16(2) प्लांट (बी)/65 दिनांक 28 अक्टूबर, 1966 के द्वारा टैरिफ आयोग से कच्चे रबड़ की उत्पादन लागत के बारे में जांच करने और इसकी विभिन्न श्रेणियों और किस्मों के लिए उचित मूल्य के संबंध में प्रतिवेदन देने का अनुरोध किया गया था। आयोग ने अपना प्रतिवेदन दे दिया है जिसमें निम्नलिखित सिफारिशों की गई हैं।

- (1) रबड़ बोर्ड द्वारा राजस्व अधिकारियों की सहायता से रबड़ के वास्तविक क्षेत्र, विशेषतः पूर्व विकसित क्षेत्र की गणना की जानी चाहिए ताकि अधिक विश्वसनीय आंकड़े प्राप्त हो सकें।
- (2) रबड़ बोर्ड का प्रति हेक्टर 294 कि० ग्रा० (प्रति एकड़ 262 पौंड) की औसत उपज का अनुमान कम है। यह वांछनीय है कि व्यापारियों के व्यापारिक कारोबार की जांच करने के अधिक कठोर उपाय निकाले जाएं जिनसे न केवल उत्पादन के सही आंकड़े मिलना अपितु वास्तव में देय उपकरण का आकलन करना भी सुनिश्चित हो सके।
- (3) रबड़ की श्रेणियों के मूल्यों में विद्यमान अंतर यथावत रखे जाने चाहिए।
- (4) स्वदेशी उत्पादन के व्यवस्थित विपणन के लिए यह आवश्यक है कि आयात नियमित मासिक किस्मों में आने चाहिए न कि इस तरह जैसे कि 1966 के उत्तरार्द्ध में हुआ कि बहुत बड़ी मात्रा का समय भाई जबकि पेड़ों की पुष्पाई का कार्य क्रमसीमा पर था।
- (5) आयातों के परिणाम और उनके कार्यक्रम के संबंध में रबड़ बोर्ड का परामर्श लिया जाना चाहिए, आयात समान मात्रा में वर्ष भर में किये जाने चाहिए।
- (6) उत्पादकों द्वारा पुनर्रोपण पर किए गए खर्चों को पूंजीगत निवेश माना जाना चाहिए और इस पुनर्रोपण लागत को रबड़ की बिक्री से उपजित किया जाना चाहिए। विकास खर्चों का अंदांश (अर्थात् 11.67 रुपए) उत्पादकों के धारण मूल्य में सम्मिलित किया जाना चाहिए। उत्पादकों को दिए जाने वाले उत्पादन की नई दर की सिफारिश की जाती है ताकि वे पुनर्रोपण की लागत को पूरा कर सकें जोकि धारण मूल्य के माध्यम से पूरी नहीं की जा सकेगी।
- (7) उत्पादकों द्वारा धारण के लिए आर० एम० ए० (1) श्रेणी के रबड़ का कोकीन में जहाज तक निःशुल्क प्रति 100 किग्रा 415 रुपए मूल्य नियत किया जाना चाहिए। इसमें बिक्री कर तथा उपकरण शामिल नहीं होगा। अन्य श्रेणियों के रबड़ तथा परिरक्षित रबड़-बुद्ध के मूल्य आयोग द्वारा बताए गये श्रेणी विधियों का समजन करने के फर्चात् नियत किए जायेंगे।
- (8) सरकार द्वारा उपकरण में कमी करने पर विचार किया जाना अपेक्षित है।
- (9) मद्रास राज्य के कन्याकुमारी जिले में पुनर्रोपण के लिये दिया जाने वाला पुनःस्थापन भत्ता राज्य के शेष भागों के समान नहीं है और इस विषय पर मद्रास सरकार द्वारा विचार किए जाने की आवश्यकता है।

2. सरकार उपर्युक्त गिफारिश (1) तथा (3) को स्वीकार करती है।
3. सरकार ने उपर्युक्त गिफारिश (2) नोट करती है।
4. सरकार ने उपर्युक्त गिफारिश (4) तथा (5) को देख लिया है और जहाँ तक व्यवहार्य होगा उन्हें कार्यान्वित करने के लिये बलम उठाये जायेंगे।
5. गिफारिश (6) सरकार के विचाराधीन है।
6. सरकार ने गिफारिश (7) को भारत के अनाधारण राजपत्र (दिनांक 27 नवम्बर, 1967 में प्रकाशित अपने संकेप मध्या 19(15) प्लाण्ट (बी)/67 दिनांक 26 नवम्बर, 1967 के पैरा 1 के द्वारा पहले ही स्वीकार कर लिया है।
7. रबड़ बागान उद्योग के और विकास के लिए एबड बोर्ड की विकासत्मक तथा गवेषणात्मक गतिविधियों के विस्तार को ध्यान में रखते हुये सरकार रबड़ पर विद्यमान उपकरण के दर, अर्थात् 30 पैसे प्रति किलो को कम करना, जैसा कि उपर्युक्त गिफारिश (8) में आयोग द्वारा सुझाव दिया गया है, व्यवहार्य नहीं समझती।
8. सरकार ने मद्रास सरकार का ध्यान उपर्युक्त गिफारिश (9) की ओर सहायक कार्यवाही के लिये दिया है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकेप को सभी सम्बन्धों को भेजा जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकेप को राजनितिक सूचनाओं भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये।

एम० वनर्जी

उप-सचिव, भारत सरकार।